SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शालेय समायोजन स्तर का अध्ययन

क्षमा त्रिपाठी, (Ph.D.), शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग,
डी. एल. एस. पी., जी. कॉलेज, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
पुष्पा सिंह, शोधार्थी,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अंबिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

क्षमा त्रिपाठी, (Ph.D.), शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग,
डी. एल. एस. पी., जी. कॉलेज,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत
पुष्पा सिंह, शोधार्थी,
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
अंबिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/09/2022
Revised on : -----
Accepted on : 08/09/2022
Plagiarism : 06% on 01/09/2022

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: **6%**
Date: Sep 1, 2022
Statistics: 172 words Plagiarized / 2931 Total words
Remarks: Low similarity detected, check with your supervisor if changes are required.

शोध सार

स्कूल समायोजन एक छात्र होने की भूमिका और स्कूल के वातावरण के विभिन्न पहलुओं के अनुकूल होने की प्रक्रिया है। समायोजन में विफलता मानसिक स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल और स्कूल छोड़ने का कारण बन सकती है, जिससे बचने के लिए विद्यार्थियों को परामर्श की आवश्यकता हो सकती है। वर्तमान अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 163 बालक–बालिकाओं के शालेय समायोजन पर केंद्रित किया गया है जिसमें बालक बालिकाओं के कुल समायोजन स्तर, शैक्षिक समायोजन स्तर, सामाजिक समायोजन स्तर एवं भावनात्मक समायोजन स्तर का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

विद्यार्थी, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन.

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक परिवर्तन लाने की एक जटिल और व्यापक प्रक्रिया है। यह एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाता है क्योंकि कुछ अर्थों में यह परिवर्तन, अनुकूलन को बढ़ावा देता है जिससे व्यक्तियों को एक सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व विकसित करने में मदद मिलती है। जीवन परिवर्तन और चुनौतियों की एक सतत् प्रक्रिया है। अलग–अलग व्यक्ति इन जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग–अलग तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। इसे प्रबंधित करने के लिए व्यक्ति द्वारा उपयोग की जाने वाली रणनीति को समायोजन कहा जाता है। मनोवैज्ञानिक रूप से, समायोजन व्यक्ति को बाहरी दुनिया की मांगों और दबावों के साथ–साथ अपनी जरूरतों, इच्छाओं और संघर्ष से निपटने में मदद

करता है। इस प्रकार समायोजन – बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक, शारीरिक और व्यावसायिक आयामों के साथ–साथ विकास में मदद करता है।

विद्यालयीन जीवन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोरों के लिये यह समय अपने आस–पास के वातावरण का गहन विश्लेषण करने का होता है। इस समय उसे सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है ताकि उसमें सही अवधारणा विकसित हो सके। इस समय उसे अपने परिवार, शाला एवं समाज के साथ समायोजन की आवश्यकता होती है ताकि उसके विकास में अनावश्यक बाधा न उत्पन्न हो। समायोजन एक प्रक्रिया है जो लगातार चलती रहती है जिसमें अपने आत्म सम्मान को बनाये रखते हुए तनाव से बचा जा सकता है। डेवी ने शालेय समायोजन पर स्पष्ट टिप्पणी की है, " शिक्षा अनुभव के सतत पुनर्निर्माण से जीवन जीने की प्रक्रिया है। यह विद्यार्थी में उन सभी क्षमताओं का विकास है जो उसे अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने और उसकी सम्भावनाओं को पूरा करने में सक्षम करेगा"। "समायोजन इस दुनिया में शांति से रहने के लिये एक आवश्यक तत्व है। समायोजन की प्रक्रिया जन्म से शुरु होकर मृत्यु तक जारी रहता है। समायोजन की समस्या विभिन्न परिस्थितियों जैसे घर, स्कूल, कॉलेज या कार्य स्थल पर उत्पन्न हो सकती है। यहाँ, एक व्यक्ति को अपनी मांगों को थोडा छोडने और दूसरे व्यक्ति की ज़रुरत को स्वीकार करने की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी जीवन में समायोजन प्रक्रिया में घर और स्कूल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हरबर्ट स्पेंसर (1864) के शब्दों में जीवन आंतरिक और बाहरी संबंधों का निरंतर समायोजन है। उचित समायोजन का अभाव न केवल सामान्य विकास बल्कि उनके शैक्षणिक विकास को भी प्रभावित करता है।

कोलमैन, जेम्स सी. के शब्दों में समायोजन व्यक्तियों के तनाव से निपटने और उनकी जरूरतों को पूरा करने के प्रयास का परिणाम है, साथ ही पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखने के उनके प्रयास हैं।

स्मिथ के अनुसार अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित हो तथा संतोष प्रदान करें। इस शोध में समायोजन से तात्पर्य डॉ. ए. के. पी. सिन्हा और डॉ. आर. पी. सिंह द्वारा तैयार समायोजन सूची में छात्रों द्वारा समायोजन के तीन क्षेत्रों भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक में प्राप्त प्राप्तांकों से है।

स्कूल समायोजन एक छात्र की भूमिका और स्कूल के वातावरण के विभिन्न पहलुओं के लिए अनुकूल होने की प्रक्रिया है। छात्रों को स्कूल में प्रत्येक वर्ष साथियों, शिक्षकों, कक्षाओं, स्कूल और कक्षा के नियमों, प्रक्रियाओं आदि में बदलाव का सामना करना पड़ता है जो उनके लिये एक चुनौती होती है। इन चुनौतियों का असर उसके प्रदर्शन पर भी पड़ता है। स्कूल समायोजन बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक स्तंभ की तरह है जिस पर बच्चे का पूरा जीवन टिका होता है। यह न केवल एक बच्चे की प्रगति और उपलब्धि से संबंधित है, बल्कि स्कूल के प्रति उनके दृष्टिकोण, चिंताओं, अकेलेपन, सामाजिक समर्थन और शैक्षणिक प्रेरणा से भी संबंधित है। पारस्परिक संबंध बच्चों की शैक्षणिक प्रेरणा को प्रभावित करते हैं। यदि विद्यार्थियों का समायोजन वातावरण के साथ अच्छा होता है तो इसका असर उसके प्रदर्शन पर पड़ता है।

स्कूल में सफल होने के लिए बच्चों को सामाजिक और शैक्षणिक दक्षताओं की एक श्रृंखला का प्रदर्शन करने की आवश्यकता होती है। समायोजन में समस्या ख़राब मानसिक स्वास्थ्य और स्कूल छोड़ने का कारण बन सकती है। शोध से पता चलता है कि बच्चों का अकेलापन और सामाजिक असंतोष स्कूल की उपलब्धि से नकारात्मक रूप से संबंधित है। विद्यार्थी के लिए शिक्षा उपयोगी तभी होगी जब वह अपने आसपास के साथ समायोजित हो पाए। एक ऐसा विद्यार्थी जो समायोजित है वह समस्याओं का सामना कर पाता है। उसमें यह क्षमता होती है कि वह तर्कसंगत ढंग से अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए ईमानदारी के साथ कार्य कर सके और आशावादी दृष्टिकोण रख सके।

पूर्व में संपन्न शोध अध्ययन

Hussain Kumar and Husain (2008) का अध्ययन 'शैक्षिक तनाव और हाई स्कूल के छात्रों में समायोजन' कक्षा 9 वीं के 100 विद्यार्थियों (50 विद्यार्थी शासकीय एवं 50 विद्यार्थी प्राइवेट स्कूल से) के न्यादर्श पर

किया जिसमें यह पाया गया कि शैक्षिक तनाव और समायोजन में सार्थक एवं विलोम सम्बन्ध है। प्रायवेट स्कूल के विद्यार्थियों में शैक्षिक तनाव की मात्र अधिक पाई गयी। साथ ही यह भी पाया गया कि शैक्षिक तनाव शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन को प्रभावित करता है।

Maghsoudi, **Sbour, Yazdani and Mehrabi** (2010) के अध्ययन में निष्कर्ष निकला कि जीवन कौशल सीखना सामाजिक समायोजन को बेहतर बनाने में प्रभावी है। जीवन कौशल किशोरों के सेहत एवं स्वास्थ्य समायोजन के विकास में भी सहायक है। मोहम्मद (2012) के अध्ययन से भी यह बात सिद्ध होती है कि सभी तरह के समायोजन– गृह, सामाजिक, स्वास्थ, भावनात्मक आदि में जीवन कौशल प्रशिक्षण से वृद्धि होती है।

Rahmatia, Adibradb, Tahmasianc and Sedghpour (2010) के अनुसार जीवन कौशल में प्रशिक्षण ने सामाजिक समायोजन को बढाया। इससे साथियों की अस्वीकृति में कमी आई और सामाजिक समायोजन में सुधार हुआ। ये कौशल साथियों से आपसी बातचीत, अभिवादन, दोस्ती की शुरुआत और उसे बनाये रखने, मदद मांगने और निर्देश देने में सहायक हैं।

Sharma (2012) ने राजस्थान के जयपुर शहर के एक महाविद्यालय के प्रथम वर्ष के छात्रो पर समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता पर अध्ययन किया और उसकी तुलना दुसरे कॉलेज के प्रथम एवं अंतिम वर्ष की छात्राओं के समायोजन और भावनात्मक परिपक्वता से किया जो दूसरे कोर्स में अध्ययनरत थीं और निष्कर्ष यह बताते हैं कि प्रथम वर्ष की छात्राओं में समायोजन का स्तर कम था जबकि अंतिम वर्ष की छात्राओं में समायोजन स्तर अधिक पाया गया। सामाजिक परिपक्वता और शालेय समायोजन में सार्थक सम्बन्ध पाया गया साथ ही निम्न, मध्यम और उच्च स्तर के शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।

Arya Ranjbar, Salehi Roustaei and Mazandarn (2012) इन्होने छात्रों के सामान्य स्वास्थ और सामाजिक समायोजन पर जीवन कौशल शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन प्रदर्शित करता है कि जीवन कौशल शिक्षण छात्रों के सामान्य स्वास्थ और सामाजिक समायोजन बढ़ाने में मदद करता है। साहबज़मानी, फरहानी और फ़िज़ी (2012) के अध्ययन से भी पता चलता है कि जीवन कौशल शिक्षा ने बच्चों के सामान्य स्वास्थ स्तर को बढाया हैं।

Murthy (2012) ने अध्ययन 'पर्सनालिटी ऑफ़ एडोलैसैंट्स इन रिलेशन टू देयर एडजस्टमेंट एंड डिसिशन–मेकिंग' में पाया कि समायोजन के स्तर में और निर्णय लेने में व्यक्तित्व आयामों में व्यक्तिगत अंतर हैं। साथ ही यह भी पाया कि किशोरों में व्यक्तित्व और समायोजन, व्यक्तित्व और निर्णय लेने की क्षमता, समायोजन और निर्णय लेने की क्षमता में सार्थक सम्बन्ध होता है लेकिन इन तीनों का शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सम्बन्ध नही है। यह इंगित करता है कि वर्तमान शैक्षिक वातावरण किशोरों के समग्र विकास के लिए अनुकूल नही है इसलिए ऐसे पाठ्यक्रम की अनुशंसा की गयी जो किशोरों में सर्वांगीण विकास में सहयोग दे।

Malik, Anand Karamvir and Batra (2012) 'इफ़ेक्ट ऑफ़ लाइफ स्किल्स ट्रेनिंग ऑन अकेडमिक एंग्जायटी, एडजस्टमेंट एंड सेल्फ एस्टीम लेवेल्स इन अर्ली एडोलैसैंट्स' के निष्कर्ष में पाया गया कि इस तरह के प्रशिक्षण का किशोरों पर धनात्मक प्रभाव पड़ता है।

Keshavrz, Nazri and Samarin (2014) 'जीवन शैली समूह प्रशिक्षण का व्यक्तिगत मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से छात्रों के समायोजन पर प्रभाव' अध्ययन में नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह बनाया गया, प्रायोगिक समूह को प्रशिक्षण दिया गया और नियंत्रित समूह को नहीं दिया गया। दोनों का प्री टेस्ट तथा पोस्ट टेस्ट लिया गया। T – टेस्ट के परिणाम बताते हैं कि जीवन शैली समूह प्रशिक्षण का विद्यार्थियों के कुल समायोजन एवं शैक्षिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है लेकिन सामाजिक और भावनात्मक समायोजन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

Nagar (2014) ने अपने अध्ययन 'सोशल इंटेलिजेंस एंड एडजस्टमेंट ऑफ़ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स' में लिंग के आधार पर छात्रों के सामाजिक बुद्धिमता एवं समायोजन के स्तर की पहचान की गयी। परिणाम से पता चलता

है कि छात्रों में औसत स्तर का सामाजिक बुद्धिमता एवं समायोजन है। अध्ययन के निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि जिन विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धिमता का स्तर अच्छा है उनमें बेहतर धैर्य, संवेदनशीलता, मान्यता, चातुर्य, आत्मविश्वास का उच्च स्तर के साथ–साथ समस्या–समाधान कौशल पाया गया। स्कूल में विद्यार्थियों की सामाजिक योग्यता बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए ताकि वे वातावरण से बेहतर समायोजन कर सकें।

शोध के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शालेय समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भावनात्मक समायोजन का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्राप्त अंको के आधार पर समायोजन स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शालेय समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के भावनात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध उपकरण

ए. के. पी. सिन्हा और आरपी सिंह द्वारा निर्मित स्कूली छात्रों के लिए समायोजन सूची। इसमें तीन आयाम हैं – भावात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन। इस मापनी में 60 पद हैं जिसमें भावात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन से संबंधित 20–20 पद है। प्रत्येक पद में तीन विकल्प – सदैव, कभी–कभी और कभी नहीं है।

न्यादर्श

सरगुजा ज़िले के सिद्धार्थ उ. मा. विद्यालय के कक्षा उच्चतर माध्यमिक स्तर के 116 बालक एवं 47 बालिका कुल 163 विद्यार्थी।

विश्लेषण एवं परिणाम

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण और इसकी व्याख्या निम्न प्रकार है:

परिकल्पना 1

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शालेय समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक 01: उच्च माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका में शालेय समायोजन स्तर की प्रदत्तों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता

लिंग	N	माध्य	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता की कोटि D.F	T-Value	सार्थकता
बालक	166	33.59	10.07	161	0.6722	सार्थक अंतर नहीं है।
बालिका	47	34.77	10.08			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त दी गई सारणी में स्वतंत्रता की कोटि 161 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 'T' का प्राप्त मान 0.6722 है जो तालिका में दिए मान 1.98 से कम है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के बालक और बालिका के बीच शालेय समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2

उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक 02: उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के शैक्षिक समायोजन स्तर के प्रदत्तों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता

लिंग	N	माध्य	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता की कोटि D.F	T-Value	सार्थकता
बालक	116	13.08	4.9151	161	2.5070	सार्थक अंतर है।
बालिका	47	10.9	4.2003			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त दी गई सारणी में स्वतंत्रता की कोटि 161 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 'T' का प्राप्त मान 2.5070 है जो तालिका में दिए मान 1.98 से अधिक है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के बालक और बालिका के बीच शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना 3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के भावनात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा

सारणी क्रमांक 03: उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के भावनात्मक समायोजन स्तर के प्रदत्तों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता

लिंग	N	माध्य	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता की कोटि D.F	T-Value	सार्थकता
बालक	116	8.446	5.944	161	0.0894	सार्थक अंतर नहीं है।
बालिका	47	8.536	5.624			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त दी गई सारणी में स्वतंत्रता की कोटि 161 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 'T' का प्राप्त मान 0.0894 है जो तालिका में दिए मान 1.98 से कम है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के बालक और बालिका के बीच भावनात्मक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 4

उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारणी क्रमांक 04: उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के सामाजिक समायोजन स्तर के प्रदत्तों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता

लिंग	N	माध्य	मानक विचलन S.D.	स्वतंत्रता की कोटि D.F	T-Value	सार्थकता
बालक	116	13.08	4.9151	161	2.5070	सार्थक अंतर है।
बालिका	47	10.9	4.2003			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त दी गई सारणी में स्वतंत्रता की कोटि 161 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर 'T' का प्राप्त मान 2.6996 है जो तालिका में दिए मान 1.98 से अधिक है अर्थात् उच्च माध्यमिक स्तर के बालक और बालिका के बीच सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

छात्रों के प्राप्त अंकों के आधार पर समायोजन स्तर का वर्गीकरण

विद्यार्थियों को उनके समायोजन के आधार पर 7 समूहों में वर्गीकृत किया गया था। प्रश्नावली में प्राप्त अंकों के आधार पर विभिन्न समूहों में विद्यार्थियों की संख्या निम्न प्रकार हैः–

क्र.	समायोजन का स्तर	बालक		बालिका	
		N	%	N	%
1.	अत्यधिक उच्च समायोजन	0	0%	0	0%
2.	उच्च समायोजन	33	28.5%	10	21.28%
3.	औसत से अधिक समायोजन	63	54.3%	24	51.06%
4.	औसत/मध्यम समायोजन	16	13.8%	12	25.53%
5.	औसत से कम समायोजन	2	1.7%	1	2.13%
6.	असंतोषजनक समायोजन	2	1.7%	0	0%
7.	अत्यधिक और संतोषजनक समायोजन	0	0%	0	0%

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त सारणी के अनुसार बालक एवं बालिकाओं की अधिकांश संख्या औसत से अधिक समायोजन स्तर में क्रमश 54.3% एवं 51.06% है। उच्च समायोजन स्तर में बालक एवं बालिकाओं का प्रतिशत क्रमश 28.5% एवं 21.28% है तथा औसत समायोजन स्तर में बालक एवं बालिकाओं का प्रतिशत क्रमशः 13.8% एवं 25.53% है।

शोध निष्कर्ष

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शालेय समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के शैक्षिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है। प्राप्त मध्यमान के आधार पर हम कह सकते हैं कि बालिकाओं में शैक्षिक समायोजन बालकों की तुलना में उच्च है।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के भावनात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिका के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर है। प्राप्त मध्यमान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बालकों में सामाजिक समायोजन स्तर बालिकाओं की तुलना में उच्च है।
5. इस शोध के परिणाम बताते हैं कि बालिकाओं का शैक्षिक समायोजन स्तर उच्च है जबकि बालकों का सामाजिक समायोजन स्तर उच्च है। भावनात्मक समायोजन स्तर दोनों के लगभग समान हैं। साथ ही बालक एवं बालिकाओं के कुल समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है।
6. उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं की अधिकांश संख्या औसत से अधिक समायोजन स्तर में क्रमशः 54.3% एवं 51.06% है। उच्च समायोजन स्तर में बालक एवं बालिकाओं का प्रतिशत क्रमश 28.5% एवं 21.28% है तथा औसत समायोजन स्तर में बालक एवं बालिकाओं का प्रतिशत क्रमशः 13.8% एवं 25.53% है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध इस बात की पुष्टि करता है कि विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर शालेय समायोजन स्तर एवं भावनात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अंतर नहीं है, लेकिन बालकों में सामाजिक समायोजन स्तर बालिकाओं की तुलना में उच्च है तथा बालिकाओं में शैक्षिक समायोजन बालकों की तुलना में उच्च है। अतः स्पष्ट है कि विद्यालय में बालकों को शैक्षिक समायोजन एवं बालिकओं को सामाजिक समायोजन उच्च करने हेतु आवश्यक वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता है।

REFERENCES

1. Alam, M. et all , (2018) Study of Adjustment among senior secondary students.Volume 7, Issue January 2018,ISSN:2320-2882. *International Journal of Creative Research Thoughts* (IJCRT) www.ijcrt.org
2. Arora, S. (2014). The Effect of Training of Life Skills on Academic Achievement And Adjustment of Adolescents Having Conduct Disorder And Attention Deficit Hyperactive Disorder. A Thesis Submitted To The Banasthali Vidyapith, Rajasthan. Retrieved on August 12, 2016 from http://hdl.handle. net/10603/139569
3. Arya, A.R.M., Ranjbar, H., Salehi, S., Roustaei, A., & Mazandaran (2012). Effectiveness of life skills instruction on general health and social adjustment in girl students of Rezvanshahr guidance schools. *Journal of Basic and Applied Scientific Research*, 2(11) 10818-10823.
4. Chauhan, V. (2013) A study on Adjustment of higher secondary school students of drug district. *IOSR Journal of Research & Method in Education*, e-ISSN:2320-7388 Volume 1, Issue 1,www.iosrjournals.org
5. *International Journal of Creative Research Thoughts* (IJCRT) www.ijcrt.org
6. Kaur, S. (2017). Effect of training in life skills on school adjustment and academic achievement of adolescents. A Thesis Submitted To The Punjab University. Retrieved from http://hdl.handle. net/10603/235191
7. Lakhani, P. et all (2017) School adjustment motivation and academic achievement among students, Vol.7 Issue 10, *International Journal of Research in Social Sciences*, http://www.ijmra.us

****